डॉ० अम्बेडकर के शैक्षिक विचारों की प्रासंगिकता

डॉ॰ शंकर जी

डॉ० अम्बेडकर के अनुसार पाठ्यक्रम में केवल शिक्षण अधिगम सुविधाएँ ही नहीं प्रदान करनी चाहिए बल्कि इसमें चरित्र, व्यवहार, संगठन, अनुभव, आत्म–अनुभूति तथा आत्म– अभिव्यक्ति की शिक्षा भी देनी चाहिए। पाठ्यक्रम की प्रकृति ऐसी तैयार करनी चाहिए कि यह विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता पैदा कर सके। विद्यार्थी को दी जानेवाली रोटी कपड़ा व मकान की शिक्षा, भगवान की शिक्षा से ज्यादा महत्वपूर्ण होनी चाहिए। डॉ० अम्बेडकर व्यावसायिक शिक्षा को अधिक महत्व देते हैं। वे एक राष्ट्रीय भाषा के पक्ष में थे। राष्ट्रीय भाषा का विचार समाज में एकता व समानता स्थापित करता है। डॉ० अम्बेडकर ने यहां तक कहा कि एक भारतीय जो हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा के रूप में स्वीकार नहीं करता, उसे भारतीय नहीं पुकारा जाना चाहिए।